See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/368641935

□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ 2020□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□

Book · December 2022

CITATIONS
0

READS
84

1 author:

Debaki Sirola
Uttarakhand Open University
23 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Debaki Sirola on 19 February 2023.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

ResearchGate

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में उपादेयता

Dr.Debaki Sirola
Assistant professor
School of Education
Uttarakhand Open University Haldwani (Nainital)
dsirola@uou.ac.in M.755058688

सारांश – महात्मा गांधी की "बुनियादी शिक्षा" का उद्देश्य वास्तविक जीवन स्थितियों के माध्यम से प्रशिक्षित आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उपयोगी नागरिक तैयार करना था जो समाज और व्यक्तियों दोनों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक कौशल/क्षमताएं प्रदान करना है गांधीजी का यह भी मानना था कि शिक्षा की अंतिम अवस्था केवल डिग्री प्राप्त करने या सरकारी नौकरी पाने के लिए नहीं होनी चाहिए। उनके अनुसार, कौशल विकास और युवाओं को सशक्त बनाना शिक्षा प्रणाली का हिस्सा होना चाहिए ताकि लोग शिक्षित बेरोजगार होने के बजाय स्वरोजगार कर सकें और दूसरों को भी रोजगार दे सकें ताकि राष्ट्र निर्माण की प्रगति में भागीदारी सुनिश्चित हो सकें। इसलिए महात्मा गांधी जीवन-केंद्रित और बाल-केंद्रित शिक्षा में विश्वास करते थे। स्कूल में तीन आर पढ़ना, लिखना और अंकगणित सीखने के अलावा, उन्होंने श्री एच के हाथ, दिल और सिर के विकास पर जोर दिया।, गांधी जी का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के एकीकृत व्यक्तित्व का विकास करना होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से एक बच्चे को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक उत्पादक शिल्प सीखने में सक्षम होना चाहिए। किसी उद्योग या व्यवसाय को अपनाकर जीवन की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं। इसलिए उन्होंने शिक्षा के मुख्य उद्देश्य के रूप में आत्मनिर्भरता और आजीविका कमाने की वकालत की ताकि व्यावसायिक शिक्षा के साथ – साथ सांस्कृतिक उन्नति भी प्राप्त की जा सके। इस प्रकार शिक्षा के विकास के दो पहलू साथ-साथ चलना चाहिए। गांधीजी ने जोर देकर कहा कि शिक्षा को व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित करना चाहिए। इसी प्रकार नई शिक्षा नीति ने व्यावसायिक शिक्षा पर छात्रों को मास्टर बनने देने के साथ ही उच्च शिक्षा के लिए बहु-प्रवेश और निकास विकल्प और

विषयों के पसंद की विविधता कौशल विकास और युवाओं को सशक्त बनाने का मार्ग प्रसस्थ किया है जो न केवल रोजगार योग्य हैं बल्कि रोजगार पैदा करने में भी सक्षम हैं।

विषय-संकेत:- गांधी जी के शैक्षिक विचार, शिक्षा नीति 2020 एवं उपादेयता।

प्रस्तावना-- भारत को अधिक दिनों तक गुलाम रखने के लिए अंग्रेजों ने मैकाले द्वारा बनाये गये एक विशेष प्रकार की शिक्षा नीति तैयार कर लागू की थी, जिसका उद्देश्य भारत में 'काले अंग्रेज' तैयार करना था। इस शिक्षा नीति से भारत में एक ऐसा वर्ग का निर्माण होता था जो चेहरे से तो काला था लेकिन मानसिक रुप से गोरा था। इस शिक्षा नीति से निकलने वाला छात्र व युवा अपनी भारतीय सभ्यता, संस्कृति व परंपरा को अत्यंत हिकारत भरी दृष्टि से देखता था और विदेशी गोरों की परंपरा- व्यवस्था को महान मानते हुए गोरे प्रभुओं के लिए काम करता था। भारत स्वतंत्र होने के बाद शिक्षा व्यवस्था वामपंथी शिक्षाविदों के हाथ में चली गई। स्वतंत्रता के बाद यह आशा की जा रही थी कि शिक्षा नीति में परिवर्तन होगा तथा शिक्षा का भारतीयकरण किया जाएगा, लेकिन दुर्भाग्य से इस मामले में बहुत कुछ नहीं हुआ और उसी ढर्रे पर चलता रहा। अर्थात अंग्रेजों के समय से लेकर स्वतंत्रता के बाद से ही जो शिक्षा नीति देश मे चल रही थी वह भारत के छात्रों व युवाओं को स्व संस्कृति, स्व सभ्यता, स्व भाषा से काट रहा था। आज 34 वर्षों के बाद आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय छात्रों और युवाओं में न केवल 'स्व' की भावना को बढायेगी बल्कि उन्हें पश्मिच केन्द्रित करने के बजाय भारत केन्द्रित करेगी और महात्मा गांधी के सपनों को पूरा करने में यह नीति सहायक सिद्ध होगी। अत: यह कहना उचित होगा कि मैकाले की शिक्षा नीति देश पर एक धब्बा थी जिसे शिक्षा नीति 2020 ने खत्म करके उसका भारतीयकरण किया है जिसमें प्राचीन भारतीय सनातन संस्कृति, ज्ञान, परंपराओं और महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों को उचित स्थान दिया गया है, ताकि शैक्षिक परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके और एक अनुकूल माहौल तैयार हो सके जिससे छात्र बेहतर मानव और कुशल नागरिक बन पाएँगें

महात्मा गांधी भारत व भारतीयता के प्रबल समर्थक थे और कहते थे " मेरा सुविचारित मत है कि अंग्रेजी की शिक्षा जिस रुप से हमारे यहां दी गई है। उसने अंग्रेजी पढे लिखे भारतीयों को दुर्वलीकरण किया है। भारतीय विद्यार्थियों की स्नायविक ऊर्जा पर जबरदस्त दबाव डाला है और हमें नकलची बना दिया है। अनुवादकों की जमात पैदा कर कोई देश राष्ट्र नहीं बन सकता। " (यंग इंडिया 27.04.2014)

गुरु शिष्य परम्परा वाली प्राचीन भारतीय शिक्षा समय के साथ और विकृत होती गयी गाँधी जी ने गुरु शिष्य परम्परा के मूल्यों को उचित स्थान दिया था। इसलिए शिक्षा नीति 2020 ने इन मूल्यों को बहाल करने के लिए गुरु को केंद्र में रखकर बदलाव किए गए हैं ताकि शिक्षक और छात्रों के बीच व्यावसायिक संबंध होने के बजाय छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आत्मीयता के साथ एक पूर्ण शैक्षणिक संबंध हो, जिससे यह भी सुनिश्चित होगा कि शिक्षकों को भी समाज में वही सम्मानजनक स्थान मिलेगा, जो उनके पूर्वजों को पहले मिलता था।

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को "बुनियादी शिक्षा" या नई तालीम कहा जाता है। गांधी के अनुसार 'साक्षरता शिक्षा का अंत नहीं है और न ही यह शुरुआत है। अर्थात साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे क्लर्क तैयार करना नहीं है जो अपने दिमाग का इस्तेमाल न करें। सच्ची शिक्षा आत्मनिर्भर होनी चाहिए और व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली होनी चाहिए तथा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। नई तालीम का काम सिर्फ पेशा सिखाना नहीं था, बल्कि उसके जरिए पूरे आदमी का विकास करना था। सच्ची शिक्षा सभी के लिए आसानी से सुलभ होनी चाहिए और अपने दैनिक जीवन में सभी के लिए उपयोगी होनी चाहिए। महात्मा गांधी जी का मानना है कि किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लगातार पूछताछ और स्वस्थ जिज्ञासा पहली आवश्यकता है। यदि हम ग्रामीणों की आवश्यकताओं के अनुकूल सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं, तो हमें करना चाहिए। विद्यापीठों और शिक्षण संस्थानों को गांवों तक ले जाएं। एक लोकतांत्रिक योजना में, शिक्षा को बढ़ावा देने में निवेश किया गया धन लोगों को दस गुना रिटर्न देता है, वैसे ही जैसे अच्छी मिट्टी में बोया गया बीज भरपूर फसल देता है। महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा की धारणा सत्य और जीवन की गतिविधियों में व्याप्त प्रेम से उत्पन्न होती है। इसलिए गांधी जी नई तालीम के माध्यम से बच्चों और मनुष्य में स्वतंत्र सोच पैदा करना चाहते

थे। नई तालीम का उद्देश्य वास्तविक जीवन स्थितियों के माध्यम से प्रशिक्षित आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उपयोगी नागरिक तैयार करना है, ताकि समाज और व्यक्तियों दोनों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक कौशल/क्षमताएं प्राप्त हो सके। गांधी जी इस विचार में स्पष्टता रखते थे कि शिक्षा के मूल ज्ञान को कभी अलग नहीं करना चाहिए। श्रम से सीखने को अलग करने से सामाजिक अन्याय होता है। बदलती परिस्थितियों के अनुकूल और सामाजिक परिवर्तन के कार्य में रचनात्मक भागीदारी के लिए गतिशील समाजों में, शिक्षा को व्यक्तियों को उनके लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण से लैस करना होता है ताकि यह युवाओं में हताशा, अवसाद, चिंता और भावनात्मक समस्याओं को सुलझाने में मददगार साबित हो सके। इसके लिए शिक्षा में गांधी जी ने सबसे पहले व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर जोर दिया। गांधी जी का मानना है कि एक मजबूत चरित्र के बिना कोई भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में गौरव हासिल नहीं कर सकता। शिक्षा जो व्यक्ति को चरित्रवान नहीं बना सकती है, जब तक कि वह नैतिक आचार संहिता का पालन नहीं करता। व्यक्ति के व्यवहार में सच्चाई और अहिंसा चरित्र निर्माण में दो बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं।

संबन्धित साहित्य का अध्ययन :-

ए० सेन (1973) के द्वारा महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन पर अध्ययन किया गया। उन्होने अपने अध्ययन में पाया कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्राथमिक शिक्षा के साथ हस्त शिल्प का ज्ञान भी होना आवश्यक है।

शाह, पी. के. (2017) के अनुसार गाँधी जी के शैक्षिक विचार सत्य, प्रेम, आत्म-बलिदान के शाश्वत सिद्धांतों पर आधारित हैं। चरित्र निर्माण, सत्य, अहिंसा एवं हस्तशिल्प आदि उनकी प्रासंगिकता कभी नहीं खोएगी।

अध्ययन के उद्देश्य- प्रस्तुत अध्ययन को सम्पन्न करने के लिए अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गये हैं -

1.महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

2.शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की उपादेयता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि –प्रस्तुत शोध में एतिहासिक एवं वर्णनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है, जो प्राथमिक एवं गौण स्रोतों के विवेचनात्मक अध्ययन पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत महात्मा गाँधी के मौलिक रचनाओं और शिक्षा नीति 2020 के मूल ड्राफ़्ट आदि के अध्ययन द्वारा मौलिक तथ्यों और विशिष्टाओं का पता लगाया गया है। द्वितीय स्रोत के अन्तर्गत संबन्धित शोध कार्यों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध- पत्र, शोध-ग्रंथ आदि का अध्ययन कर शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में उपादेयता खोजने का प्रयास किया गया है।

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की उपादेयता- महात्मा गांधी जी ऐसे प्रयोगवादी थे जिन्होंने जीवन भर सत्य के साथ प्रयोग किया। वह प्राचीन संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित थे और आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक थे और यह अतीत और वर्तमान का अनूठा संश्लेषण है। इसलिए हम भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहु-भाषावाद और भाषा की शक्ति, जीवन कौशल, नैतिकता और मानवीय संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच, बहु-विषयक, समग्र शिक्षा आदि को सम्मिलित किया गया है। गांधी का मानना था कि एक छात्र को पहले उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाना चाहिए और उसके बाद राष्ट्रीय भाषा का परिचय दिया और जब वह रुचि और बुद्धि विकसित करता है तो वह अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी सीख सकता है।

(हरिजन 9.7.1938) में गांधी जी ने स्पष्ट लिखा कि हम अंग्रेजी अपने छोटे बच्चों पर लाद कर उनका मानसिक विकास सही रुप से होने नहीं दे रहे हैं। बच्चा यदि मातृभाषा में अध्ययन करता है तो उसका मानसिक विकास होगा।अंग्रेजी बच्चे पर लाद देना मानसिक दासता का परिचायक है। 2020 की शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के इस विचार पर ध्यान दिया गया है।

आज अंग्रेजी निर्विवादित रुप से विश्व भाषा शिक्षा प्रदान करने का माध्यम बनी है पर अंग्रेजी में शिक्षा प्रदान द्वारा काफी नुकसान होने की बात गांधी जी ने स्पष्ट रुप से स्वीकार करते हुए गांधी जी ने कहा " शिक्षा के माध्यम को तत्काल बदल देना चाहिए और प्रांतीय भाषाओं को हर कीमत पर उनका उचित स्थान दिया जाना चाहिए। हो सकता है इससे उच्चतर शिक्षा में कुछ समय के लिए अव्यवस्था आ जाए, पर आज जो भयंकर बर्बादी हो रही है उसकी अपेक्षा वह अव्यवस्था कम हानिकरक अधिक होगी।" गांधी जी ने और कहा कि " आज अंग्रेजी निर्विवादित रुप से विश्व भाषा है। इसलिए मैं इसे विद्यालय के स्तर पर तो नहीं विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम में वैकल्पिक भाषा के रुप में द्वितीय स्थान पर रखुंगा। वह कुछ चुने हुए लोगों के लिए तो हो सकती है , लाखों के लिए नहीं ….. यह हमारी मानसिक दासता है जो हम समझते हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। मैं इस पराजयवाद का समर्थन कभी नहीं कर सकता।" (हरिजन 25.08.1946)

गांधी जी का मानना था कि अंग्रेजी अब भारतीयों के बीच जोड़ने वाली कड़ी के उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकती है और हिंदी को अनिवार्य रूप से इसका स्थान लेना चाहिए। वास्तव में उच्च तकनीकी शिक्षा में अंग्रेजी एक लिंगुआ-फ्रैंका है, जिसे छोड़ा नहीं जा सकता। वह शिक्षा के निर्देशों के माध्यम को बदलना चाहते थे जिसमें छात्रों द्वारा जीभ पर महारत हासिल करने में बहुत ऊर्जा बर्बाद होती है, जो कि विदेशी है। इसलिए वह चाहते थे कि केवल कुछ व्यक्ति जो अंग्रेजी के लिए क्षमता और योग्यता रखते हैं, उन्हें इसे सीखना चाहिए और यह भारत और बाकी दुनिया के बीच एक जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है। वे अपने देशवासियों की खातिर महान वैज्ञानिक, साहित्यिक और सामाजिक कार्यों का अपनी राष्ट्रीय भाषा में अनुवाद भी कर सकते थे। इस बात को ध्यान में रखते हुए 2020 की शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को कैसे अधिक वरियता मिल पायेगी इसे लेकर भी प्रावधान किए गए हैं।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा मनुष्य की आंतरिक शक्तियों को खींचती है और यह सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में मदद करती है, वास्तविक शिक्षा में व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा युवा शिक्षार्थियों को नैतिक रूप से स्वस्थ, व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्र, सामाजिक रूप से रचनात्मक, आर्थिक रूप से उत्पादक और भविष्य के जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करने का चुनौतीपूर्ण कार्य करती है जो युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार करने के अवसर प्रदान करके बेरोजगारी दूर करने में सहायक साबित हो सकती है। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा से बच्चे की सभी क्षमताओं का विकास होना चाहिए ताकि वह पूर्ण मनुष्य बन सके। इस प्रकार पूर्ण और सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित व्यक्तित्व परम को प्राप्त करने में सक्षम होता है। जीवन का लक्ष्य जो सत्य या ईश्वर है। गांधी जी ने स्वयं समझाया है - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के

सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा केवल एक साधन है जिसके माध्यम से पुरुष या महिला को शिक्षित किया जा सकता है। " शिक्षा के उनके बुनियादी सिद्धांतों में निम्न बिन्दु शामिल हैं-

1. सात से चौदह वर्ष की आयु तक प्रत्येक बच्चे की शिक्षा निःशुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक होनी चाहिए।

2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।

3. मात्र साक्षरता की तुलना शिक्षा से नहीं की जा सकती। शिक्षा को किसी शिल्प के माध्यम के रूप में नियोजित करना चाहिए।

4. शिक्षा ऐसी हो जिससे बच्चा अपने जीवन के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल कर सके।

5. शिक्षा से बच्चे में मानवीय मूल्यों का विकास होना चाहिए।

6. शिक्षा को उपयोगी, जिम्मेदार और गतिशील नागरिक बनाना चाहिए। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की सभी छुपी हुई शक्तियाँ विकसित हो सके।

7. बच्चे का विकास उस समुदाय के अनुसार होना चाहिए जिसका वह अभिन्न अंग है।

8. शिक्षा को बच्चे के शरीर, मन, हृदय और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण विकास को प्राप्त करना चाहिए।

9. सभी शिक्षा किसी उत्पादक शिल्प या उद्योग और एक उपयोगी सहसंबंध के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए।

10.शिक्षा को उस उद्योग के साथ स्थापित किया जाना चाहिए। उद्योग ऐसा होना चाहिए कि बच्चा हासिल कर सके।

11. व्यावहारिक कार्य के माध्यम से लाभकारी कार्य अनुभव होना आवश्यक है।

12. कुछ उत्पादक कार्यों के माध्यम से शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जाना चाहिए।

13. शिक्षा को आर्थिक स्वतंत्रता और आजीविका के लिए आत्मनिर्भरता की ओर ले जाना चाहिए।

14. सभी शिक्षा किसी उत्पादक शिल्प या उद्योग और एक उपयोगी सहसंबंध के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए।

नई तालीम का दर्शन हमारे वर्तमान समाज द्वारा शारीरिक और मानसिक कार्यों के लिए सौंपे गए असमान मूल्यों को स्वीकार नहीं करता है। यह मनुष्य द्वारा की गई हर तरह की सेवा, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक या नैतिक हो की गणना आर्थिक संदर्भ में नहीं की जा सकती है। नई तालीम का आध्यात्मिक सिद्धांत यह है कि ज्ञान और कार्य दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। वे एक जैसी ही चीज हैं। यह कहना भूल है कि ज्ञान काम से ऊंचा है या काम ज्ञान से ऊंचा है। नई तालीम ज्ञान और कार्य की एकता की अवधारणा पर आधारित है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा में केवल छात्रों को एक निश्चित संख्या में तथ्यों और आंकड़ों को याद रखना शामिल नहीं होना चाहिए उससे छात्रों में सुस्ती और निष्क्रियता आती है। एक छात्र स्कूल या कॉलेज में क्या सीखता है और वह घर पर क्या अभ्यास करता है, इसके बीच वास्तव में कोई संबंध नहीं है। ये दो चीजें पैमाने के विपरीत छोर पर हैं। इसके बजाय, उन्होंने करके सीखने पर अधिक बल दिया है। गांधी जी ने रटने की शिक्षण विधियों को अस्वीकार कर दिया और इसे दोषपूर्ण माना और शिल्प और व्यवसायों को शिक्षा के साधन के रूप में बनाने पर जोर दिया। उनकी इच्छा थी कि बच्चों के लिए कुछ स्थानीय शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने शरीर, मन और आत्मा को एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित करें और अपने भविष्य के जीवन की जरूरतों को भी पूरा करें।

गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा सार्वभौमिक शिक्षा थी, सभी के लिए मुफ्त और सरकार और अन्य के नियंत्रण से मुक्त। गांधी जी का कहना था कि यदि आप शिक्षा में स्वतंत्रता चाहते हैं, तो यह आत्मनिर्भर और स्वावलंबी होनी चाहिए। यह जीवन के लिए, जीवन भर और जीवन भर के लिए शिक्षा की एक प्रणाली है। इस प्रणाली में एक उपयुक्त शिल्प का चयन करना होगा जो सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादन सुनिश्चित करेगा। यह शिक्षा प्रणाली को स्वावलंबी बनाएगा। गांधी जी का मानना है कि शिक्षा प्रणाली एकीकृत और सहसंबद्ध होनी चाहिए, जिसे 'सीखने और सिखाने' की प्रणाली के रूप में वर्णित किया जा सके। इस प्रणाली को देश के सामाजिक और भौतिक वातावरण के साथ व्यवस्थित रूप से सहसंबन्धित करने के लिए उन्होंने मुख्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा का लक्ष्य रखा और गतिविधि केंद्रित शिक्षा को बनाने के लिए कहा ताकि बच्चे कुशलता और स्वतंत्रतापूर्वक सीख कर रोजगार प्राप्त कर सकें। इसके लिए गांधी जी छोटे, आत्मनिर्भर समुदायों का निर्माण करना चाहते थे, जिसके नागरिक एक छोटे सहकारी और समुदाय में रहने वाले सभी मेहनती, स्वाभिमानी और उदार व्यक्ति हों। उनकी इच्छा

थी कि बच्चों के लिए कुछ स्थानीय शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा को एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित कर सकें और अपने भविष्य के जीवन की जरूरतों को भी पूरा कर पाएँ। ऐसे गांधीवादी शैक्षिक विचार वर्तमान के विकास और समाधान प्रदान करने के लिए प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष – निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि गांधीजी की बुनियादी शिक्षा उनके शिक्षा दर्शन का व्यावहारिक अवतार थी। यह शिल्प के माध्यम से एक ऐसी शिक्षा थी जिसमें सभी विषयों के मूल में शिल्प से संबंध था, जो न केवल रोजगार योग्य हैं बल्कि रोजगार पैदा करने में भी सक्षम हैं , अत; सभी शिक्षा किसी उत्पादक शिल्प या उद्योग और एक उपयोगी सहसंबंध के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए।

- गांधी द्वारा प्रस्तावित मन, शरीर और आत्मा का समग्र विकास की अवधारणा को शिक्षा नीति 2020 में लागू हुई हैं, जो शरीर, मन और आत्मा से संबंधित सभी पक्षों का ध्यान रखता है।
- गांधीजी जी का मानना है कि शिक्षा को सूचना प्रदान करने के बजाय चरित्र निर्माण पर जोर देना चाहिए और व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित करना चाहिए। गाँधी जी के इन विचारों को शिक्षा नीति 2020 में देखा जा सकता है।
- मातृभाषा पर शिक्षा नीति 2020 का ध्यान गांधीजी के भाषा समस्या के समाधान की याद दिलाता है।
- शिक्षा नीति 2020 के संबंध में सबसे बड़ी बहसों में से एक त्रिभाषा सूत्र और प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा के पसंदीदा तरीके के रूप में मातृभाषा पर जोर था। यह गांधी के दर्शन और 'भाषा की समस्या' के उनके समाधान की सीधी व्याख्या है।

- गांधीजी जी का मानना है कि हस्तशिल्प को यंत्रवत् नहीं वैज्ञानिक रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। शिक्षा की प्रक्रिया "करके सीखना" होना चाहिए न कि केवल किताबों से। शिक्षा नीति 2020 में इस प्रणाली का पालन किया गया है, जहां कुम्हार, लोहार और बढ़ई, कारीगर जैसे आदि व्यावसाय शिक्षा व्यवस्था में शामिल हैं, ताकि छात्र शिल्प और उत्पादक श्रम की गरिमा सीख पाएंगे।
- . नई शिक्षा नीति ने व्यावसायिक शिक्षा पर छात्रों को मास्टर बनने पर बल दिया है ताकि वे विषयों की पसंद की विविधता पर कैसे और क्या अध्ययन करना चाहते हैं, उच्च शिक्षा के लिए बहु-प्रवेश और निकास विकल्प सभी ऐसे कार्यबल के विकास को पूरा करते है यह न केवल रोजगार योग्य हैं बल्कि रोजगार पैदा करने में भी सक्षम हैं,जो गांधी जी के विचारों के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं।
- गांधी जी ने प्रस्ताव दिया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि छात्र जीवन की लड़ाई को सफलतापूर्वक लड़ने में सक्षम हो। उसे जीवन और दुनिया की समस्याओं पर स्पष्ट और आलोचनात्मक तरीके से सोचने और उनके समाधान विकसित करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षा नीति 2020 में इन सब पक्षों पर ध्यान दिया गया है।.गांधीजी का शिक्षा दर्शन मानव जाति को शांति, प्रगति, समृद्धि और आध्यात्मिक गौरव के मार्ग पर ले जाने में सक्षम है, जो समय की जरूरत है। शिक्षा नीति 2020 में गांधीजी के इन विचारों को विश्व शांति के मार्ग को प्रशस्थ करने में सहायक सिद्ध होंगे।
- शिक्षा नीति 2020 गांधीवादी विचार को लेने और देश के युवाओं को महात्मा गांधी की तरह भारत को सच्चा नेता बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करता है।
- शिक्षा नीति 2020 'शिक्षा' के बजाय सीखने पर जोर देता है और छात्रों को वह हासिल करने के लिए सही उपकरण प्रदान करने का प्रयास करता है जो छात्रों को सक्षम बनाने के लिए उपयोगी हैं।
- नई शिक्षा नीति में शामिल महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली एक कुशल व्यक्ति का निर्माण ही नहीं करेगी बल्कि यह समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगी। इसलिए नई शिक्षा नीति में गांधीवादी सोच का विस्तार किया गया है।

- व्यावसायिक शिक्षा, मातृभाषा शिक्षा पर शिक्षा नीति 2020 और गांधीवादी विचारों के बीच एकता का एकमात्र सूत्र है।
- भारत को ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी देश बनाने और ज्ञान का पावर हाउस बनाने के साथ साथ भारतीय छात्र- युवाओं को मानसिक दासता से मुक्त करने के लिए शिक्षा नीति 2020 कारगर सिद्ध होगी।

सन्दर्भ:

1.सैन, ए०के० (1973), ''महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन'' पी-एच०डी० (शिक्षा) बम्बई विश्वविद्यालय।

2. वैद्य, एन० के० (1985), ''एनीबेसेंट तथा मोहनदास करमचंद गाँधी के शैक्षिक दर्शन'', डी० लिट० आर० एन० विश्वविद्यालय।

3. विजयलक्ष्मी, एन. और अन्य (2016), "21 वीं सदी में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता", इंजीनियरिंग में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, आई टी और सामाजिक विज्ञान, वॉल्यूम। 6, अंक 1.

4. शाह, पी.के. (2017) "गांधीजी के विचार बेसिक एजुकेशन एंड इट्स रेलेवेंस", पुणे रिसर्च एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश, वॉल्यूम 3, अंक 4.

5. नई शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।

6. त्रिपाठी, कर्नल प्रवीण (2020), '' नई शिक्षा नीति पर महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव: एक आँकलन।

7. मिश्र, योगेश (2020), '' नई शिक्षा नीति (2020), डेमोक्रेसी इन इंडिया।

View publication stats